अध्याय 12: काले मेघा पानी दे

विषय-सूची 3 प्रश्नावली · 9 प्रश्न

प्रश्नावली 12.1	पाठ के साथ	6 प्रश्न
प्रश्नावली 12.2	पाठ के आसपास	2 प्रश्न
प्रश्नावली 12.3	शब्द-छवि	1 प्रश्न

प्रश्नावली 12.1 — पाठ के साथ

प्रश्न 1

लोगों ने लड़कों की टोली को मेढक-मंडली नाम किस आधार पर दिया? यह टोली अपने आपको इंदर सेना कहकर क्यों बुलाती थी?

हल

मेढक-मंडली नाम का आधार:
लड़कों की टोली नंगे बदन, केवल जाँघिया या लंगोटी पहने, भीगते हुए कीचड़ में लोट लगाती थी और उछलती-कूदती चलती थी।
यह व्यवहार बिल्कुल मेढकों जैसा था — नग्न, कीचड़ में लथपथ, उछलते-कूदते।
जो लोग उनके नग्न शरीर, उछलकूद, शोर-शराबे और गली में होने वाले कीचड़-काँदो से चिढ़ते थे, उन्होंने उन्हें 'मेढक-मंडली' कहा।

इंदर सेना नाम का कारण:
इंद्र वर्षा के देवता और बादलों के स्वामी हैं।
यह टोली इंद्र (इंदर) को पुकारकर वर्षा माँगती थी — काले बादलों से पानी बरसाने की प्रार्थना करती थी।
अपने आप को इंद्र की सेना कहकर वे यह संकेत देते थे कि वे इंद्र देवता की आज्ञा से उनका संदेश लेकर आए हैं और उनके प्रतिनिधि के रूप में पानी माँग रहे हैं।
इस प्रकार 'इंदर सेना' नाम उनके उद्देश्य और विश्वास को व्यक्त करता था।

उत्तर: लड़कों की टोली नंगे बदन कीचड़ में मेढकों की तरह उछलती-कूदती थी, इसीलिए उन्हें 'मेढक-मंडली' कहा गया। वे स्वयं को 'इंदर सेना' इसलिए कहते थे क्योंकि वे इंद्र (वर्षा देवता) की सेना के रूप में बादलों से पानी माँगने निकले थे।

प्रश्न 2

जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

हल

जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंकने को निम्नलिखित तर्कों से उचित ठहराया:

1. अर्घ्य का तर्क:
जीजी ने कहा कि यह पानी की बरबादी नहीं, बल्कि पानी का 'अर्घ्य' चढ़ाना है।
जो चीज मनुष्य पाना चाहता है, उसे पहले देना होगा — यह सिद्धांत उन्होंने प्रस्तुत किया।

2. त्याग और दान का तर्क:
जीजी ने समझाया कि जब किसी के पास कोई चीज कम हो और वह उसे दूसरे के लिए दे दे — यही सच्चा त्याग और दान है।
करोड़ों में से दो-चार रुपये देना त्याग नहीं; जो कम हो उसे देना ही वास्तविक त्याग है।

3. बुवाई का तर्क:
जीजी ने खेती का उदाहरण दिया — किसान पाँच-छह सेर बीज जमीन में बोता है तो तीस-चालीस मन गेहूँ उगता है।
उसी प्रकार गली में पानी 'बोना' (फेंकना) बुवाई है — इससे सारे शहर पर पानीवाले बादलों की फसल आ जाएगी।

4. ऋषि-मुनियों का प्रमाण:
जीजी ने कहा — 'पहले खुद दो, तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे।'
यही बात ऋषि-मुनियों ने कही है और गांधी जी भी यही सिखाते हैं।

उत्तर: जीजी ने पानी फेंकने को 'अर्घ्य' और 'बुवाई' बताकर उचित ठहराया। उनका तर्क था — जो पाना हो उसे पहले देना होगा; यही त्याग है, यही दान है, और इसी का फल मिलता है। जैसे किसान बीज बोकर फसल पाता है, उसी प्रकार पानी बोने से बादलों की फसल आएगी।

प्रश्न 3

पानी दे, गुड़धानी दे — मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग क्यों की जा रही है?

हल

इंदर सेना के गीत में 'पानी दे, गुड़धानी दे' की माँग कई अर्थों में सार्थक है:

गुड़धानी क्या है?
गुड़धानी गुड़ और चने से बना एक प्रकार का लड्डू/मिठाई है, जो सूखे अनाजों से बनती है।

माँग का कारण:
1. **बच्चों की स्वाभाविक इच्छा** — यह टोली बच्चों की है; वे पानी माँगने के साथ-साथ मिठाई भी चाहते हैं। यह बाल-स्वभाव की सहज अभिव्यक्ति है।
2. **कृषि-जीवन की आवश्यकता** — पानी की माँग फसल के लिए है। गुड़धानी चने और गुड़ से बनती है — ये भी खेती की उपज हैं। इसलिए पानी की माँग के साथ फसल और भोजन की माँग स्वाभाविक है।
3. **समग्र जीवन की आवश्यकता** — पानी मिलने पर ही खेत में फसल होगी, अनाज मिलेगा और गुड़धानी जैसी मिठाई बन सकेगी। इस प्रकार गुड़धानी की माँग पानी की माँग से ही जुड़ी है।
4. **उत्सव की भावना** — वर्षा होने पर खुशी मनाई जाती है; मिठाई उस खुशी का प्रतीक भी है।

उत्तर: मेघों से गुड़धानी की माँग इसलिए है क्योंकि यह टोली बच्चों की है और बच्चे स्वाभाविक रूप से मिठाई माँगते हैं। साथ ही पानी मिलने पर खेत में फसल होगी, अनाज मिलेगा और गुड़धानी जैसी मिठाई बन सकेगी — इस प्रकार गुड़धानी पानी मिलने के बाद के सुखी जीवन का प्रतीक भी है।

प्रश्न 4

गगरी फूटी बैल पियासा — इंदर सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों मुखरित हुई है?

हल

इस पंक्ति में 'गगरी फूटी बैल पियासा' द्वारा कृषि-जीवन की त्रासदी को मुखरित किया गया है:

बैल किसान का सहारा:
भारतीय कृषि-समाज में बैल किसान का सबसे महत्त्वपूर्ण साथी था। खेत जोतने से लेकर अनाज ढोने तक सब काम बैल से होता था।

सूखे में बैलों की दशा:
जब पानी की इतनी कमी हो कि कुएँ सूख जाएँ, नलों में पानी न आए, तो ऐसे में पशुओं को पानी पिलाना भी मुश्किल हो जाता है।
सूखे के कारण ढोर-ढंगर (पशु) प्यास के मारे मरने लगते थे — यह पाठ में स्पष्ट उल्लेख है।

गगरी फूटने का अर्थ:
'गगरी फूटी' अर्थात् पानी लाने का बर्तन भी टूट गया — कोई उपाय न रहा।
बैल की प्यास किसान की बेबसी का प्रतीक है — अगर बैल प्यासा रहा या मर गया तो खेती ठप हो जाएगी, और पूरे कृषि-जीवन पर संकट आ जाएगा।

निष्कर्ष:
यह पंक्ति कृषक-समाज की सबसे गहरी पीड़ा को व्यक्त करती है — सूखे में इंसान ही नहीं, उसका मूक सहयोगी पशु भी पानी के बिना तड़पता है।

उत्तर: इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात मुखरित हुई है क्योंकि बैल कृषक-जीवन का आधार है। सूखे में पशु-पक्षी भी पानी को तरसते हैं; 'गगरी फूटी' अर्थात् पानी लाने का कोई उपाय न बचा। बैल की प्यास कृषि-समाज की सम्पूर्ण बेबसी और संकट का प्रतीक है।

प्रश्न 5

इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है? नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्त्व है?

हल

इंदर सेना के गंगा मैया की जय बोलने का कारण:
पाठ में उल्लेख है — 'पहला जयकारा लगता था, बोल गंगा मैया की जय।'
गंगा भारतीय संस्कृति में जल की देवी और जीवनदायिनी मानी जाती है।
इंदर सेना वर्षा के लिए निकलती है — जल की प्राप्ति की कामना में जल की सबसे पवित्र देवी गंगा मैया का

आशीर्वाद लेना स्वाभाविक है।
गंगा का स्मरण कार्य की शुभ शुरुआत का प्रतीक है।

नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक महत्त्व:

1. **जीवन का आधार** — नदियों के किनारे ही सभ्यताएँ बसी हैं। गंगा, यमुना, सिंधु आदि नदियों के किनारे भारतीय सभ्यता विकसित हुई।
2. **कृषि का आधार** — नदियों का पानी खेतों की सिंचाई के लिए अनिवार्य है; कृषि-अर्थव्यवस्था का आधार नदियाँ हैं।
3. **धार्मिक महत्त्व** — गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा आदि नदियाँ पवित्र मानी जाती हैं; उनमें स्नान, तर्पण और अस्थि-विसर्जन धार्मिक कर्तव्य माने जाते हैं।
4. **माँ की संज्ञा** — भारतीय संस्कृति में नदियों को 'मैया' (माँ) कहा जाता है — जैसे गंगा मैया, नर्मदा मैया। यह प्रेम और श्रद्धा का भाव है।
5. **साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रेरणा** — नदियाँ भारतीय काव्य, लोकगीत, कथाओं और मिथकों में सर्वत्र उपस्थित हैं।

उत्तर: इंदर सेना वर्षा माँगने से पहले जल की देवी गंगा मैया का आशीर्वाद लेती है — क्योंकि गंगा जल की प्रतीक और जीवनदायिनी हैं। नदियाँ भारतीय समाज में जीवन, कृषि, धर्म और संस्कृति — सभी का आधार हैं; उन्हें 'माँ' के रूप में पूजा जाता है।

प्रश्न 6

रिश्तों में हमारी भावना-शक्ति का बँट जाना विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजती हमारी बुद्धि की शक्ति को कमजोर करती है। पाठ में जीजी के प्रति लेखक की भावना के संदर्भ में इस कथन के औचित्य की समीक्षा कीजिए।

हल

कथन का सार:

यह कथन बताता है कि जब हम किसी प्रिय व्यक्ति से गहरा भावनात्मक जुड़ाव रखते हैं, तो उस प्रेम-संबंध के कारण हमारी तर्क-बुद्धि कमजोर पड़ जाती है। हम उनके विश्वासों को चुनौती देने में असमर्थ हो जाते हैं।

पाठ के संदर्भ में:

लेखक कुमार-सुधार सभा का उपमंत्री था — अंधविश्वासों के विरुद्ध 'तरकस में तीर रखकर' घूमता था।
किंतु जीजी उसकी सबसे प्रिय थीं — 'बचपन में जिससे सबसे ज्यादा प्यार मिला।'
जीजी 'उन तमाम रीति-रिवाजों, तीज-त्योहारों, पूजा-अनुष्ठानों की खान' थीं जिन्हें लेखक अंधविश्वास मानता था।

भावना और बुद्धि का द्वंद्व:

लेखक ने इंदर सेना पर पानी न फेंकने का निर्णय लिया और मुँह फुलाकर बैठा रहा।
किंतु जब जीजी 'बूढ़े पाँवों से डगमगाते, काँपते हाथों से बाल्टी उठाकर' पानी देने गईं — लेखक का मन पिघलने लगा।
जीजी के प्रेम और उनके तर्कों ने लेखक के 'तर्कों का किला पस्त' कर दिया।
लेखक स्वीकार करता है कि जीजी की संतुष्टि और उनका सद्भाव बचाए रखने के लिए वह 'ऊपरी तौर पर ही सही, उन रीति-रिवाजों को अपनाने को बचपन में बाध्य बना रहता था।'

औचित्य की समीक्षा:

यह कथन पाठ के संदर्भ में पूर्णतः सार्थक है। जीजी के प्रति गहरे प्रेम के कारण लेखक की तर्क-बुद्धि उनके सामने काम नहीं कर पाई।

हालाँकि यह कहना भी उचित होगा कि भावना की यह 'कमजोरी' एक मानवीय गुण भी है — स्नेह और संबंध भी जीवन का सत्य हैं।

लेखक स्वयं इस द्वंद्व का उत्तर नहीं देता — 'विज्ञान का सत्य बड़ा है या सहज प्रेम का रस? या दोनों?' — यह प्रश्न पाठक पर छोड़ दिया गया है।

उत्तर: यह कथन पाठ के संदर्भ में पूर्णतः सार्थक है। लेखक अंधविश्वास-विरोधी था, किंतु जीजी के प्रति गहरे प्रेम के कारण उनके विश्वासों को चुनौती देने की उसकी बुद्धि-शक्ति कमजोर पड़ गई। प्रेम और तर्क के इस द्वंद्व में लेखक का मन 'पस्त' हुआ — यही इस कथन का औचित्य है।

प्रश्नावली 12.2 — पाठ के आसपास

प्रश्न 1

तकनीकी विकास के दौर में भी भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है। कृषि-समाज में चैत्र, वैशाख सभी माह बहुत महत्त्वपूर्ण हैं पर आषाढ़ का चढ़ना उनमें उल्लास क्यों भर देता है?

हल

भारतीय कृषि-समाज में आषाढ़ (जून-जुलाई) वर्षा ऋतु का प्रथम मास है।

चैत्र-वैशाख बनाम आषाढ़:
चैत्र (मार्च-अप्रैल) में रबी की फसल काटी जाती है और नए वर्ष का उत्सव होता है।
वैशाख (अप्रैल-मई) में गर्मी बढ़ती है — यह परिश्रम का समय है।
किंतु आषाढ़ का आगमन मानसून का सूचक है — वर्षा की आस जागती है।

आषाढ़ में उल्लास के कारण:
1. **बुवाई का मौसम** — आषाढ़ में खरीफ की फसल (धान, मक्का, ज्वार-बाजरा) की बुवाई होती है। पानी मिले तो खेत लहलहाएँगे।
2. **जल-संकट का अंत** — जेठ (मई-जून) की तपती गर्मी के बाद आषाढ़ में बादलों का आगमन राहत देता है।
3. **समृद्धि की आशा** — पानी मिलने पर ही फसल होगी, रोजगार मिलेगा, परिवार का भरण-पोषण होगा — इसीलिए आषाढ़ का चढ़ना जीवन-आशा का संदेश है।
4. **लोक-संस्कृति का उत्सव** — मेघ-मल्हार गीत, तीज-त्योहार, झूला-झूलना — आषाढ़ से ही प्रारंभ होता है।

पाठ में भी यही दिखाया गया है — आषाढ़ का पखवारा बीत जाने पर भी बादल न आएँ तो पूरा गाँव-शहर व्याकुल हो जाता है।

उत्तर: आषाढ़ का चढ़ना कृषि-समाज में उल्लास भरता है क्योंकि यह वर्षा और खरीफ बुवाई का संकेत है। पानी मिलने पर ही फसल होगी और जीवन सुखमय होगा। जेठ की तपती गर्मी के बाद बादलों का आगमन जीवन की आशा और समृद्धि का संदेश लेकर आता है।

प्रश्न 2

पाठ के संदर्भ में इसी पुस्तक में दी गई निराला की कविता बादल-राग पर विचार कीजिए और बताइए कि आपके जीवन में बादलों की क्या भूमिका है?

हल

काले मेघा पानी दे और बादल-राग — तुलनात्मक विचार:

काले मेघा पानी दे में बादलों की भूमिका:
धर्मवीर भारती के इस संस्मरण में बादल जीवनदाता हैं — भयंकर सूखे में उनका आगमन ही एकमात्र आशा है।

इंदर सेना बादलों को पुकारती है — 'काले मेघा पानी दे' — यह एक निर्बल समाज की करुण प्रार्थना है। बादल यहाँ विज्ञान और विश्वास के द्वंद्व के केंद्र में हैं।

बादल-राग में बादलों की भूमिका:
निराला की कविता में बादल केवल वर्षा का माध्यम नहीं, बल्कि क्रांति और परिवर्तन के प्रतीक हैं। बादल 'शोषितों के हाहाकार' को व्यक्त करते हैं और शोषण-व्यवस्था को नष्ट करने के लिए बरसते हैं। वे 'जीर्ण बाहु' उठाकर नई सृष्टि की माँग करते हैं।

बादलों की भूमिका:
बादल भारतीय जनजीवन में केवल जलवायु की घटना नहीं — वे आशा, राहत, प्रेम और परिवर्तन के प्रतीक हैं। कृषि-समाज में बादलों का आगमन फसल की गारंटी है; साहित्य में बादल शोषण से मुक्ति का प्रतीक। दोनों पाठों में बादल जन-आशा और जन-संघर्ष के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत हैं।

उत्तर: काले मेघा पानी दे में बादल सूखे से त्राण दिलाने वाले जीवनदाता हैं — जन की करुण पुकार का लक्ष्य। बादल-राग में निराला के बादल क्रांति के प्रतीक हैं — शोषण को नष्ट करने वाले। दोनों में बादल जन-आशा के प्रतीक हैं — एक में जल की आशा, दूसरे में परिवर्तन की आशा।

प्रश्नावली 12.3 — शब्द-छवि

प्रश्न 1

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ पाठ के आधार पर लिखिए: गुड़धानी, टेरते, दसतपा, पखवारा, ढोर-ढंगर, सतिया, अर्घ्य, अरवा चावल, हर-छठ, भूजा, किला पस्त

हल

पाठ में दी गई शब्द-छवि के अनुसार अर्थ:

1. **गुड़धानी** — गुड़ और चने से बना एक प्रकार का लड्डू (मिठाई)।
2. **टेरते** — पुकारते; आवाज लगाते।
3. **दसतपा** — तपते हुए दस दिन (जेठ के तपते दशक)।
4. **पखवारा** — पंद्रह दिन की अवधि; पखवाड़ा।
5. **ढोर-ढंगर** — पशु; मवेशी।
6. **सतिया** — स्वस्तिक चिह्न।
7. **अर्घ्य** — जल चढ़ाना; पूजा में देवता को जल अर्पित करना।
8. **अरवा चावल** — ऐसा चावल जिसे धान को बिना उबाले निकाला गया हो।
9. **हर-छठ** — जन्माष्टमी के दो दिन पूर्व मनाया जाने वाला पर्व (पूर्वी उत्तर प्रदेश से संबंधित)।
10. **भूजा** — भुना हुआ अन्न; भुने हुए अनाज (चना, गेहूँ, चावल, मक्का आदि)।
11. **किला पस्त** — हार जाना; तर्क या संघर्ष में पराजित हो जाना।

उत्तर: गुड़धानी = गुड़-चने की मिठाई; टेरते = पुकारते; दसतपा = तपते दस दिन; पखवारा = पंद्रह दिन; ढोर-ढंगर = पशु; सतिया = स्वस्तिक चिह्न; अर्घ्य = जल चढ़ाना; अरवा चावल = बिना उबाले निकाला चावल; हर-छठ = जन्माष्टमी से दो दिन पूर्व का पर्व; भूजा = भुना हुआ अन्न; किला पस्त = हार जाना।